Notes

गुथरी तथा होर्टन के अनुसार :- गुथरी तथा होर्टन सीखने अर्थात ज्ञान प्राप्त करने के संबंध में बिल्लियों पर अनेक प्रयोग किये उन्होंने ने अपने प्रयोग में बिल्लियों के रुचिवद्ध व्यवहार द्वारा समीपता अनुबन्धन सिद्धान्त के आधार पर उद्दीपन एवं अनुक्रिया के बीच होने वाले अनुबन्धन की व्याख्या समीपता के आधार पर करके ज्ञान प्राप्ति अर्थात सीखने या जानने में उनका महत्व पूर्ण योगदान है।

ज्ञान का निर्माण

प्रो० एस० के दूबे :- ज्ञान का निर्माण सूचनाओं के संगठनात्मक एवं उपयोगी स्वरूप से जिसके माध्यम से छात्रों को सर्वांगीण विकास हेतु ज्ञानात्मक सामग्री की उपलब्धता सरलता से होती है। तथा छात्र ~~स्वयं~~ स्वयं बिखरी हुई सूचनाओं एवं आंशिक गति विधियो ~~व्यवस्थित~~ व्यवस्थित करता है। और स्वयं को सर्वांगीण विकास का पथ ~~प्र~~ प्रशस्त करता है।

श्रीमती आर० के० शर्मा :- ज्ञान के निर्माण का आशय सूचनाओं के प्रबन्धन, संगठन एवं पुन: प्राप्ति की प्रक्रिया ~~से~~ से है। जिसमें विज्ञान तकनीकी दर्शन एवं सामाजिक व्यवस्थाओं से सम्बन्धित तथ्यों को सरल रूप प्रस्तुत किया जाता है। जिसमें सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया में शिक्षक शिक्षालय एवं विद्यार्थी तीनों को ही सहायता मिलती है।

ज्ञान निर्माण की विशेषताएँ

1- सूचनाओं के निर्धारण की प्रक्रिया — ज्ञान के निर्माण के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की सूचनाओ का अध्ययन किया गया है। निर्धारण सामान्य रूप से पुस्तकालय में समावेशित ग्रन्थो की व्यवस्था के आधार पर होता है। जैसे- पुस्तकालय में विभिन्न क्षेत्रो के ज्ञान से सम्बन्धित ग्रन्थ जिसमे शारीरिक शिक्षा, ज्ञानात्मक शिक्षा दार्शनिक शिक्षा एवं विज्ञान ~~सम्बन्धित~~ सम्बन्धी शिक्षा को समाहित किया गया है।

2. सूचनाओं के समन्वयन की प्रक्रिया - सामान्य रूप से यह देखा जाता है कि विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ एक दूसरे ~~के~~ से सम्बन्धित होती है।

जैसे - भौतिक विज्ञान और रसायन विज्ञान में तथा गणित तीनो मे एक समान्वयन की प्रक्रिया बनी होती है। जो कि तीनो क्षेत्र के आवश्यक सूचनाओ के माध्यम से दी जाती है।

सूचनाओं के संश्लेषण एवं विश्लेषण की प्रक्रिया

ज्ञान के निर्माण मे संश्लेषण एवं विश्लेषण की प्रक्रिया को बहुत बड़ा महत्व दिया गया है। जिसमे सूचनाओ के माध्यम से संश्लेषण के अनुसार अनेक को एक करना तथा विश्लेषण का अर्थ है। एक एक को अनेक करना जो की सूचनाओं के माध्यम से दी जाती है।

Scanned with CamScanner

Notes

4- सूचनाओं की पुनः प्राप्ति की प्रक्रिया के रूप में
सूचनाओं को पुनः प्राप्ति ज्ञान के निर्माण
का प्रमुख अंग माना गया है।
केन फील्ड — एक पुस्तकालय व्यवस्था को उसकी
कार्य करने की गुणवत्ता के रूप में माना जाता है।
पुनः प्राप्ति एवं नियम के अनुसार
जैसे - एक छात्र पुस्तकालय में पुस्तक प्राप्त
करने जाता है। उसकी आवश्यकता ये पुस्तक
की ओर से एक मॉंग की जाती है।
5- ज्ञान का निर्माण उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया के रूप में
6 ज्ञान का निर्माण तकनीकी सूचनाओं की प्रक्रिया के रूपमें
7 ज्ञान का निर्माण एक व्यापक प्रक्रिया के रूप में

ज्ञान निर्माण के उपागम या तरीके

1- ज्ञान के निर्माण का परम्परागत उपागम -
2- मुख विश्लेषणात्मक उपागम -
3 सूचना पुनः प्राप्ति उपागम
4 प्रयोग कर्ता आधारित उपागम
5 कार्य क्षेत्र में विश्लेषण उपागम

Scanned with CamScanner

Notes

ज्ञान निर्माण के उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व

ज्ञान निर्माण के उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व ज्ञान के निर्माण को व्यापक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है। पुस्तकालय व्यवस्था शिक्षक एक अंग है। शिक्षक, शिक्षार्थी शिक्षार्थी विद्यालय की दृष्टि से ज्ञान के उद्देश्य आवश्यकता महत्व का निम्नलिखित रूप स्पष्ट किया गया है।

ज्ञान का संगठित रूप :- ज्ञान निर्माण का प्रमुख उद्देश्य शिक्षक एवं शिक्षार्थी को ज्ञान के संगठित रूप से परिचय करना ज्ञान के निर्माण मे पुस्तकालय के माध्यम, विद्यालय व्यवस्था के माध्यम से शिक्षण अधिगम के प्रक्रिया माध्यम से छात्रों की ज्ञान का संगठित किया जा सकता है।

(2) सूचनाओं का सर्वोत्तम विभाजन :- ज्ञान निर्माण के माध्यम से संवेगात्मक, शैक्षिक, सामाजिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक तथा शारीरिक विकास आदि सम्बन्धी सूचनाओं को एकत्रित किया जाता है।

(3) आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में ~~उपयोगी~~ उपयोग :- वर्तमान समय मे छात्र अपने कार्य की एवं आवश्यकता के अनुसार वे अपने विषयों पर व्यापक सूचना एकत्रित करना चाहता है। इस सूचना के अनुसार शिक्षक विद्यालय, पुस्तकालय भी सहायता करता है। जिसमे छात्र अपनी रुचि चयन करते है। सीखने मे अपना योगदान देते है।

Notes

(4) सांस्कृतिक मूल्यों के विकास में —

सांस्कृतिक विकास की प्रक्रिया भी ज्ञान निर्माण का एक भाग है। इसका विकास संज्ञानात्मक संरचना के माध्यम से होता है। इसमे अनेक विद्यालयों मे सांस्कृतिक कार्य क्रम का दायित्व छात्रों को होता है। इस कार्य क्रम को सफल संचालन के लिए छात्रों विभिन्न प्रकार की सूचनाओ की आवश्यकता होती है। सूचना शिक्षकों, पुस्तकों, पत्रिकाओं पुस्तकालयों विद्यालयी व्यवस्था से प्राप्त होती है।

(5) दार्शनिक ज्ञान मे सहायक — ज्ञानात्मक विकास के अन्तर्गत दार्शनिक विकास सम्भव होता है। जब छात्र विद्यालय मे आदर्शवादी स्कूलो की शिक्षा प्राप्त करते है। इस प्रकार विद्यालय व्यवस्था एवं शिक्षण व्यवस्था मे दार्शनिक विषयो को समझाता है।
जैसे- सत्यं शिवं सुन्दरम आदि के आदर्श की ओर वह रहा हो। इसे आदर्शवाद मे प्रेम जाग्रत हो रहा है।

(6) प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के लिए

(7) बौद्धिक विकास मे उपयोगी